REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2019

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार संकेतग्रह का अभिधा निरुपण

Karanghiya Mulubhai Devabhai
M.A., Ph.D.

सारांशः—

संसार में अनन्त शब्द विद्यमान है। शब्द की महत्ता तब होती है जब वह अपने उचित अर्थ के साथ समन्वित होता है। शब्द से अर्थ की प्रतीति का कार्य शब्दशक्ति द्वारा होता है। शास्त्रों में शब्दशक्ति के विवेचन में अभिधा शक्ति को मुख्य शब्दशक्ति के रुप में प्रतिपादित किया है। वाचक शब्द से वाच्यार्थ की प्रतीति कराने वाली अभिधा शक्ति हेतु संकेतग्रह को पर्याय माना गया है। आचार्य विश्वनाथ नें अभिधा को संकेतित अर्थ का बोधन कराने वाली शक्ति के रुप में निरुपित किया है। आचार्य विश्वनाथ द्वारा संकेतग्रह का अभिधा में स्थान, संकेतग्रह के उपाय, तथा क्षेत्र का विवेचन साहित्यदर्पण में किया है। आचार्य विश्वनाथ ने उपाधिशक्तिवाद सिद्धांत का पालन कर संकेतग्रह के क्षेत्र जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया के निरुपण के साथ अभिधा शक्ति का विवेचन पूर्ण किया।

कूटशब्दः अभिधा, संकेतग्रह के उपाय, वृद्धव्यवहार, प्रसिद्धार्थपदसमभिव्याहार, आप्तोपदेश, जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया

प्रस्तावना

सभी शास्त्रों में शब्द तथा अर्थ के सम्बन्ध को नित्य माना गया है। नैयायिक ही केवल ऐसे है जो शब्द तथा अर्थ के सम्बन्ध की नित्यता को स्वीकार नहीं करते है। नैयायिक द्वारा शब्द को अनित्य मान्य किये जाने के कारण ही इनके द्वारा शब्द तथा अर्थ के सम्बन्ध को नित्य नही माना गया है। अन्य शास्त्रों में शब्दार्थो की समष्टि की नित्यता को स्वीकार किया गया है। शब्द तथा अर्थ की प्रतीति हेतु अनिवार्य शब्दशक्ति को शास्त्रों में भिन्न—भिन्न नामों से उक्त किया है। अलंकारशास्त्र में वर्णित शक्ति ही दर्शनशास्त्र की वृत्ति होती है। अलंकारशास्त्र में इसे शक्ति, वृत्ति, व्यापार आदि नामों से जाना जाता है। आचार्य मम्मट ने इसके लिये व्यापार का प्रयोग किया है—

स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो
व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।1।

महावैयाकरण नागेशभट्ट ने वृत्तियों का विवेचन करते हुये अभिधा को शक्ति के नाम से निरुपित करते है—

सा च वृत्तिस्त्रिधा
शक्तिर्लक्षणा व्यंजना च।2।

अर्थात् शब्द की वृत्तियां तीन है— शक्ति, लक्षणा तथा व्यंजना। यहां शक्ति से तात्पर्य अभिधा से है। काव्यशास्त्र में शक्ति, वृत्ति, व्यापार आदि नामों से व्यवहृत किया जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने केवल नामों में भेद मानकर शक्ति, व्यापार, वृत्ति को एक ही माना है। प्रायः सभी शास्त्रों में अभिधा को शक्ति के रुप में निरुपित किया गया है। आनन्दवर्धनाचार्य ने वाच्यार्थ के ज्ञान से ही व्यंग्यार्थ की प्रतीति होना कहा है—

यथा पदार्थद्वारेण वाक्यार्थः सम्प्रतीयते।
वाच्यार्थपूर्विका तद्वत् प्रतिपत्तस्य वस्तुनः ।3।

इसी वाच्यार्थ की प्रतीति अभिधाशक्ति द्वारा होता है। अभिधा को मीमांसको ने भी स्वीकार किया है। मुख्य अर्थ की प्रतीति कराने के सम्बन्ध में मुकुलभट्ट ने कारिका उद्धृत की है–

शब्दव्यापारतो यस्य प्रतीतिस्तस्य मुख्यता
अर्थावसेयस्य पुनर्लक्ष्यमाणत्वमुच्यते।।4।।

अभिधा को मुख्यार्थ की प्रतीति कराने वाली मुख्य शक्ति के रुप में सभी ने स्वीकारा है। आचार्य मम्मट ने वाच्यार्थ को मुख्यार्थ कह कर अभिधा को मुख के समान कहा है। जिस प्रकार शरीर में जो प्रधानता मुख की होती है, वही प्रधानता शब्दशक्ति में अभिधा की होती है। मुख्यार्थ अर्थात् वाच्यार्थ की प्रतीति कराने वाली वृत्ति के रुप में आनन्दवर्धनाचार्य ने निरुपित किया है–

आलोकार्थी यथा दीपशिखायां यत्नवान् जनः।
तदुपायतयाः तद्वदर्थे वाच्ये तदादृतः।।5।।

अर्थात् आनन्दवर्धनाचार्य ने वाच्यार्थ की प्रतीति कराने में समर्थ वृत्ति को मुख्यावृत्ति कहा है। आचार्य विश्वनाथ भी अन्य आचार्यो की भांति अभिधा को मुख्य शब्दशक्ति के रुप में निरुपित करते हुये प्रथमतः विवेचित करते है–

तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा।।6।।

अर्थात् किसी पद के संकेतित अथवा प्रसिद्ध अर्थ का बोधन कराने वाली शक्ति अभिधा होती है। आचार्य विश्वनाथ ने अभिधा को संकेतित अर्थ का बोधन कराने वाली शक्ति के रुप में निरुपित किया है। शब्द तथा अर्थ के समन्वय में संकेत का स्थान महत्वपूर्ण होता है। संकेत के अभाव में शब्द का उचित अर्थ के साथ समन्वय तथा उपयुक्त क्रिया के साथ नियोजन संभव नहीं है। आचार्य पद के संकेतग्रहण की महत्ता से परिचित थे, इसलिये अभिधा निरुपण में संकेतित अर्थ से अभिधा को संबद्ध किया है। आचार्य विश्वनाथ ने भी संकेतग्रह के विषय में, संकेतग्रह के उपाय तथा संकेतग्रह के क्षेत्र का विवेचन कर अभिधा निरुपण को पूर्ण करते है।

संकेतग्रह

संसार में अनन्त शब्दराशि विद्यमान है, इन शब्दों का महत्व तब होता है जब वह अपने अर्थ के साथ समन्वित होता है। पद से पदार्थ की प्रतीति तथा क्रिया आदि के साथ नियोजन संकेतग्रह के अर्न्तगत समावेशित है। आचार्य विश्वनाथ ने संकेतित अर्थ को प्रसिद्ध अर्थ भी कहा है। संसार में प्रत्येक कार्य को करने के लिये एक माध्यम का होना आवश्यक होता है, माध्यम अर्थात् वह साधन जिनके द्वारा मानव किसी विषय से सम्बद्ध ज्ञान प्राप्त करता है।

इसी प्रकार संकेत ग्रहण करने के माध्यम को संकेतग्रह के उपाय कहा जाता है। संकेतग्रह के मुख्यतः उपाय माने जाते है–

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोषाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद् विवृत्तेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः।।7।।

अर्थात् व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष, विवृत्ति अर्थात् व्याख्या और सिद्धपद के सान्निध्य से संकेत का ग्रहण किया जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने इन तीन उपायों वृद्धव्यवहार, प्रसिद्धार्थपदसमभिव्याहार, व आप्तोपदेश को निरुपित किया है।

वृद्धव्यवहार

मानव एक संसारिक प्राणी है, जन्म के साथ ही वह अपने समाज, परिवार के व्यवहार से ही ज्ञान प्राप्त करता है। वह आसपास के वातावरण से नित्य कुछ न कुछ ज्ञान ग्रहण करता है। मानव का जीवन मुख्यतः व्यवहार पर आधारित है। शब्द अथवा पद के संकेतित अर्थ का ज्ञान भी मुख्यतः व्यवहार से होता है। अतः आचार्य विश्वनाथ ने संकेतग्रह के उपाय में भी वृद्धव्यवहार को निरुपित किया है। जब घर में बालक गृहस्वामी द्वारा अन्य को गामानय का आदेश देते हुये देखता है तथा अन्य व्यक्ति द्वारा गाय को लाने की क्रिया से गाय से सस्नादि प्राणी विशेष तथा आनय से इसका संकेतित अर्थ लाना ज्ञात होता है। इसी क्रिया को बार बार

दोहराने से बालक गां तथा आनय के संकेतित अर्थ से पूर्णतः परिचित होता है। किसी कार्य को दोहराने की क्रिया आवापोद्वाप कहलाती है। इसी प्रकार अश्वमानय की क्रिया द्वारा बालक को अश्व पद का संकेतित अर्थ अन्य प्राणी के रुप में ज्ञात होता है।

व्यवहार से संकेतग्रहण में आवापोद्वाप का महत्वपूर्ण स्थान है, आवापोद्वाप द्वारा किसी भी संकेतित अर्थ का ज्ञान व्यवहार द्वारा हो जाता है। इस प्रकार अश्व, गाय, बधान तथा आनय इसी प्रकार संकेत का ग्रहण वृद्धव्यवहार से होता है।

प्रसिद्धार्थ पदसमभिव्याहार

आचार्य विश्वनाथ ने संकेतग्रह के उपाय के रुप में प्रसिद्धार्थपदसमभिव्याहार को उद्धृत किया है। ऐसा पद जिसका अर्थ पहले ही जाना जा चुका है अथवा जो अर्थ लोक में प्रसिद्ध हो उसे प्रसिद्ध अर्थ की संज्ञा दी जाती है। प्रसिद्धार्थपदसमभिव्याहार से तात्पर्य प्रसिद्ध अर्थ के साथ समभिव्याहार में होने के कारण अन्य पद के संकेतित अर्थ का भी ग्रहण हो जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने इह प्रभिन्नकमलोदरे मधूनि मधुकरः पिबति के द्वारा उक्त किया है। कमल के पुष्परुपी प्रसिद्ध अर्थ का ज्ञान होने से उनके साहचर्य के कारण मधुकर का भ्रमर अर्थ में संकेतग्रह होता है। मधुकर का भ्रमर अर्थ उसके कमल के साथ साहचर्य से ज्ञात होता है। प्रसिद्ध अर्थ के सान्निध्य से अन्य पद के संकेतित अर्थ का ग्रहण आचार्य विश्वनाथ ने प्रसिद्धार्थपदसमभिव्याहार नामक उपाय से निरुपित किया है।

आप्तोपदेश

आप्त अर्थात् ऐसे व्यक्ति जिनके वचनों को प्रमाणित माना जाता है। आप्त द्वारा किसी भी विषय में उक्त वचन में शंका की स्थिति नहीं होती है। आचार्य विश्वनाथ ने आप्तोपदेश को संकेत के ग्रहण के उपाय के रुप में निरुपित किया है। आप्त द्वारा अयमश्वशब्दवाच्यः द्वारा यह प्राणी अश्व है, द्वारा अश्व पद का प्राणी विशेष में संकेतग्रह वचनमात्र से हो जाता है। आप्तोपदेश की प्रमाणिकता के कारण आचार्य विश्वनाथ ने संकेतग्रह का एक उपाय माना है।

संकेतग्रह का क्षेत्र

संकेत का ग्रहण उपायों द्वारा किया जाता है तथा यह संकेतग्रह जिन पर होता है उसे संकेतग्रह के क्षेत्र कहा जाता है। संकेतग्रह के क्षेत्र के विषय में महाभाष्यकार पतंजलि द्वारा शब्दों के चार विभाग किये गये है–

चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्तिः जातिशब्दाः, गुणशब्दाः,क्रियाशब्दाः, यदृच्छाशब्दाश्चतुर्थाः ।8।

अर्थात् संकेत का विषय जाति, गुण, द्रव्य तथा क्रिया को माना है। इस मत को उपाधिशक्तिवाद कहा जाता है। उपाधिशक्तिवाद से तात्पर्य संकेतग्रह व्यक्ति की उपाधि पर माना जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने इसी आधार पर संकेतग्रह के क्षेत्र विवेचित किये है–

संकेतोगृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च ।9।

अतः संकेतित अर्थ के चार क्षेत्र होते है– जाति, गुण, द्रव्य तथा क्रिया माने जाते है। आचार्य विश्वनाथ का यह मत भी उपाधिशक्तिवाद के सिद्धांत पर आधारित है। उपाधिशक्तिवाद के अनुसार यह जाति, गुण, द्रव्य तथा क्रिया एक ही व्यक्ति की उपाधि होते है। यथा एक ही गौ व्यक्ति की गौ, शुक्ल, डित्थ, चल आदि उपाधि में संकेतग्रह होता है। गौ से गोत्व जाति, शुक्ल से गुण, डित्थ से द्रव्यवाचक शब्द, तथा चल से क्रिया का ज्ञान होता है।

संकेतित अर्थ में जाति से तात्पर्य वह प्रवृत्ति जो गौ को अन्य व्यक्तियों से भिन्न बनाती है। यथा गौ की गोत्व जाति में संकेतग्रह होने से वह गौ का सस्नादि प्राणीविशेष अर्थ का ज्ञान होता है। गुण द्वारा यह व्यक्ति को अपने सजातीय से भिन्न करती है। गौ का शुक्लत्व गुण में संकेतग्रह उसे अन्य गौव्यक्तियों से भिन्नता परिलक्षित होती है। गौव्यक्ति की यह शुक्ल गुण की उपाधि उसे सजातीय कृष्ण अथवा अन्य वर्ण की गौ से पृथक करती है। द्रव्य से तात्पर्य संज्ञावाचक शब्दों से है। संसार में सभी अपने नाम से जाने जाते है तथा इसी नाम को साहित्य में संज्ञा कहा जाता है।

यह नाम अथवा संज्ञा ही किसी व्यक्ति का परिचायक होता है। हरिहर, डित्थ आदि द्रव्यवाचक शब्दों में संकेतग्रह होने से गौ की पहचान होती है। संकेतग्रह के क्रिया उपाधि साध्य रुप में होती है।

अतः किसी कार्य को प्रारंभ करने से निष्पादित करने तक की प्रक्रिया को क्रिया के अर्न्तगत माना जाता है। यथा पाक क्रिया से आशय चावल को साफ करने से लेकर चावल के पकने तक की प्रक्रिया से होता है। आचार्य मुकुलभट्ट ने क्रिया को साध्य तथा पाक क्रिया के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है।

तत्र साध्योपाधिनिबन्धनाः क्रियाशब्दाः यथा पचतीति।10।

संकेतग्रह के विषय में व्यक्तिशक्तिवाद का सिद्धांत भी प्रचलित है। इस मत के अनुसार संकेतग्रह व्यक्ति पर किया जाता है। व्यक्ति पर संकेतग्रह मानने पर एक गौ व्यक्ति पर संकेतग्रह कर उसका संकेतित अर्थ यह गौ है जाना जाता है। व्यक्ति पर संकेतग्रह मानने पर अलग अलग व्यक्तियों पर संकेतग्रह किया जायेगा क्योंकि एक व्यक्ति पर संकेतग्रह कर सभी की पहचान संभव नहीं है। इस उपाय द्वारा अनन्त गौ व्यक्तियों पर संकेतग्रह मानने से आनन्त्य दोष होने लगेगा। इस दोष से बचने हेतु एक व्यक्ति में संकेतग्रह मानकर सभी गौ व्यक्ति पर संकेतग्रह माना जाये तब ऐसी स्थिति में व्यभिचार दोष की संभावना होने लगेगी। संकेतग्रह एक विशिष्ट पहचान होती है इसके द्वारा विशिष्ट शब्द से उसके अर्थ का ज्ञान होता है। यदि यह एक पर कर सभी में माना जाने लगे तब नियम का उल्लंघन होने लगेगा। यह नियम का उल्लंघन ही व्यभिचार दोष माना जाता है। व्यक्ति पर संकेतग्रह मानने पर यह केवल एक व्यक्ति पर ही संकेतग्रह होता है, एक ही समय पर इनमें उपाधियों जाति आदि का वर्गीकरण संभव नहीं है।

उपाधिशक्तिवाद में एक ही गौ व्यक्ति के गौ, शुक्ल, चल, डित्थ आदि विभाग किया जा सकता है। संकेतग्रह के विषय में केवल जाति में संकेतग्रह मानने विषयक एक अन्य मत भी है। आचार्य मम्मट ने अपने संकेतग्रह निरुपण कारिका में संकेतग्रह के क्षेत्रों के साथ ही केवल जाति में संकेतग्रह मानने के सिद्धांत का निरुपण
किया है–

संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा।11।

आचार्य मम्मट ने जात्यादिरेव कहकर मीमांसकों के केवल जाति में संकेतग्रह मानने के मत का उल्लेख किया है। इस मत के अनुसार जाति को ही शब्दों का प्रवृत्ति–निमित्त माना जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने उपाधिशक्तिवाद के सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति की उपाधि जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया को संकेतग्रह के क्षेत्र माना है।

उपसंहार

आचार्य विश्वनाथ ने शब्दशक्ति विवेचन में मुख्य शब्दशक्ति अभिधा का निरुपण कर संकेतित अर्थ का विवेचन किया है। संकेतग्रह द्वारा संकेतित अर्थ के ज्ञान द्वारा अभिधा से प्रतिपादित होती है। आचार्य विश्वनाथ ने संकेतग्रह के प्रमुख तीन उपाय वृद्धव्यवहार, प्रसिद्धार्थपदसमभिव्याहार, आप्तोपदेश माने है। संकेतग्रह के उपाय के पश्चात् संकेतग्रह के क्षेत्र जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया माने है। यह सिद्धांत उपाधिशक्तिवाद पर आधारित है। आचार्य विश्वनाथ ने संकेतग्रह के इस उपाधिशक्तिवाद सिद्धांत में महाभाष्यकार महर्षि पतंजलि का अनुसरण किया है। व्यक्ति पर संकेतग्रह न मानकर उसकी जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया पर संकेतग्रह माना है। आचार्य विश्वनाथ ने अभिधा शक्ति, संकेतग्रह के उपाय तथा क्षेत्रों का सारगर्भित विवेचन किया है।

संदर्भ सूची

1. काव्यप्रकाश, आचार्य मम्मट, व्याख्या आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1985, द्वितीय उल्लास, सू .11।
2. परमलघुमंजूषा, श्रीनागेशभट्ट, संस्कृत–हिन्दी व्याख्या, डॉ जयशंकर लाल त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1985, पृष्ठ –16।
3. ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धनाचार्य, व्याख्या–आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, प्रथम उद्योत, कारिका–10।

4. अभिधावृत्तिमातृका, आचार्य मुकुलभट्ट, संस्कृत–हिन्दी व्याख्या, डॉ सुज्ञान कुमार महान्ति, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2008, कारिका–1।
5. ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धनाचार्य, व्याख्या–आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, प्रथम उद्योत, कारिका–9।
6. साहित्यदर्पण, आचार्य विश्वनाथ, व्याख्या–डॉ सत्यव्रत सिंह, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1957, द्वितीय परिच्छेद, पृष्ठ–40।
7. न्यायसिद्धांत मुक्तावली, पृष्ठ–6।
8. व्याकरणमहाभाष्य, ऋलृक् सूत्र।
9. साहित्यदर्पण, आचार्य विश्वनाथ, व्याख्या–डॉ सत्यव्रत सिंह, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1957, द्वितीय परिच्छेद, कारिका–4, पृष्ठ–43।
10. अभिधावृत्तिमातृका, आचार्य मुकुलभट्ट, संस्कृत–हिन्दी व्याख्या, डॉ सुज्ञान कुमार माहान्ति, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2008, पृष्ठ–11।
11. काव्यप्रकाश, आचार्य मम्मट, व्याख्या आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1985, द्वितीय उल्लास, सू .10

Karanghiya Mulubhai Devabhai
M.A., Ph.D.

LBP PUBLICATION